विचार बिन्दु

निश्चंत मन, भरी थैली से अच्छा है। -अरबी कहावत

दर्शकों के कम होते उत्साह से ओटीटी में मंदी का दौर

सिनेमा को सिंगल स्क्रीन से मल्टी प्लेक्सेस व टीवी चैनलों से होते हुए ओटीटी प्लेटफॉर्मों तक पहुंचने में 21वीं सदी में बहुत देर नहीं लगी। किसी ने इसे सिनेमा का अंत देखा तो किसी ने इसमें सिनेमा की विविधता का भविष्य देखा। लेकिन अब ओटीटी के सामने भी आगे क्या सवाल उठ खड़ा हुआ है। कोरोना काल में जब दर्शक घरों से बाहर नहीं निकल पा रहे थे तब ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म अचानक सबके चहेते बन गये। महामारी के हालात सामान्य होने के बाद भी ओटीटी की लोकप्रियता बढ़ती गई। उन्होंने टीवी चैनलों पर फिल्मों के बीच-बीच में आने वाले विज्ञापनों के व्यवधान, तथा मल्टीप्लेक्सों की भारी टिकट दरों से दर्शकों को राहत दी। मगर मनोरंजन उद्योग के नये आंकड़े अब दिखा रहे हैं कि इन प्लेटफॉर्मों की उड़ान की गति थम रही है। पहले यह क्षेत्र 25से 30 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ रहा था। ऑरमैक्स मीडिया के अनुसार, इस वर्ष ओटीटी उपयोगकर्ता वृद्धि घटकर लगभग 10 प्रतिशत रह गई है, जो 2023-2024 में 13 से 14 प्रतिशत थी। कारोबार जगत के जानकारॉन के अनुसार भारत का ओटीटी उपयोगकर्ता आधार 2025 में लगभग 60.12 करोड़ का है। फिक्की-ईवाई की एक रिपोर्ट के अनुसार, वीडियो ओटीटी क्षेत्र 2024 में 4.7 करोड़ घरों से बढ़कर 2027 तक 6.5 करोड़ हो जाएगा। लेकिन यह उद्योग अब एक संतृप्ति -सेचुरेशन - बिंदु के करीब पहुंच रहा है। ओटीटी के सब्सक्रिप्शन रद्द होने लगे हैं। प्रोडक्शन हाउस लागत कम करने लगे हैं, जिससे कई प्लेटफ़ॉर्म अब विज्ञापन-समर्थित मॉडलों की ओर बढ़ रहे हैं। जानकार कहते हैं कि ओटीटी पर लगभग आधी स्ट्रीमिंग सामग्री क्षेत्रीय भाषाओं में है, बाकी ज़्यादातर हिंदी में है। राष्ट्रीय प्लेटफ़ॉर्म आमतौर पर चार से आठ मूल भाषाओं की रणनीति रखते हैं और विभिन्न भाषाओं में सामग्री डब करते हैं। इससे उन्हें महानगरों और छोटे शहरों में विभिन्न भाषाई दर्शकों तक पहुंचने में मदद मिलती है।यह भी सच है कि दूरसंचार साझेदारों के माध्यम से बंडल ऑफर से डेटा पैक और कंटेंट पैक दोनों की बिक्री में वृद्धि हुई है - भारत में ब्रॉडबैंड की बिक्री में अब 40 प्रतिशत से अधिक 'बंडल कंटेंट' शामिल होता है। भारत में ओटीटी का असली उभार 2016-2020 के बीच हुआ। सस्ती इंटरनेट सेवाओं ने देशभर में डेटा क्रांति ला दी, जिससे मनोरंजन के असीमित विकल्पों के साथ हर हाथ में स्मार्टफोन आ गया और नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम, डिज़्नीप्लस, हॉटस्टार, जीफाइव, सोनीलिव जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म भारतीय मनोरंजन जगत में प्रमुख माध्यम के रूप में उभरे। कोविड-19 महामारी के दौरान जब सिनेमा हॉल बंद थे, तब यही मंच फिल्मों और सीरीज़ का प्रमुख ठिकाना बने। निर्माताओं के लिए यह नया बाजार था, दर्शकों के लिए सुविधाजनक मनोरंजन, और कलाकारों के लिए एक ऐसा मंच, जो उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दे रहा था। परंतु एक साल से ओटीटी की वृद्धि दर थमने लगी है। यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, तकनीकी और सृजनात्मक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

ओटीटी ने सामग्री के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को मदद की। वहां केवल बड़े सितारों की फिल्मों का राज नहीं रहा; छोटे-छोटे शहरों के कलाकार, स्वतंत्र निर्देशक और नये लेखक अपनी कहानियां सीधे दर्शकों तक पहुंचा पाने में सक्षम हुए। वहां सेंसरशिप की सख्त पकड़ भी नहीं थी, इसलिए विषय-वस्तु में प्रयोग बढ़े और उनमें जबरदस्त बोल्डनेस आई। लेकिन हर उभार के साथ एक ठहराव भी आता है। और अब, ओटीटी उसी मोड़ पर खड़ा है जहां से उसका गुब्बारा धीरे-धीरे पिचकता दिख रहा है। ओटीटी की मंदी का एक कारण उसके बाज़ार का संतृप्त (सेचुरेट) हो जाना बताया जा रहा है। भारत में अब लगभग हर प्रमुख दर्शक वर्ग तक ओटीटी पहुंच चुका है। नए सब्सक्राइबर जोड़ने की रफ्तार बहुत धीमी हो गई है। जो लोग इन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करते हैं, वे पहले से ही सब्सक्राइब्ड हैं, जबकि नए उपयोगकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए कंपनियां निवेश नहीं आकर्षित कर पा रहीं है और भारी छूट देने की हालत में नहीं है। ओटीटी प्लेटफॉर्मों ने अपने नियम भी कड़ी किये हैं। जैसे नेटफ्लिक्स और अन्य प्लेटफॉर्मों ने पासवर्ड शेयरिंग पर रोक लगाई है। साथ ही, सब्सक्रिप्शन दरें भी बढ़ती जा रही हैं। इससे मध्यम वर्ग के दर्शक दोबारा सोचने लगे हैं कि क्या मनोरंजन पर हर महीने इतना खर्च करना उनके लिए सचमुच उचित है। इसके अलावा ओटीटी पर कंटेंट की गुणवत्ता में गिरावट भी सबको महसूस हो रही है। प्रारंभिक वर्षों में ओटीटी पर जो नवीनता उफन रही थी, वह अब घट रही है। सीरीज़ की संख्या बढ़ी है पर गुणवत्ता में निरंतरता नहीं रही। एक जैसी कहानियां, अतिशय हिंसा, गाली-गलौज और सेक्सुअल कंटेंट ने दर्शकों को थका दिया है। नयापन अब दुर्लभ हो गया है। इसलिए अब दर्शकों का क्रेज़ भी अब ढलान पर है। हालांकि सिनेमा हॉल की वापसी से तो इसे नहीं जोड़ा जा सकता क्योंकि सस्ते टिकटों वाले सिंगल स्क्रीन पर जैसा कंटेन्ट था उसको चाहने वाली पीढ़ी बदल गई है। हालांकि कोरोना महामारी के बाद जैसे ही सिनेमाघर खुले, दर्शक बड़े पर्दे के अनुभव के लिए लौटते नजर आये। 'पठान', 'जवान', 'आर आर आर', 'केजीएफ-2' और 'पुष्पा' जैसी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अभूतपूर्व सफलता पाई। यह संकेत था कि भारतीय दर्शक अभी भी सामूहिक मनोरंजन को प्राथमिकता देते हैं।

> **आने वाले वर्षों में ओटीटी और थिएटर दोनों ही सह-अस्तित्व की राह पकड़ सकते हैं। कई फिल्में पहले थिएटर में और कुछ सप्ताह बाद ओटीटी पर आएंगी। यह मॉडल पहले से प्रचलन में है और भविष्य में इसके और परिष्कृत होने का अनुमान लगाया जा रहा है। ओटीटी की स्थिरता के बीच एक क्षेत्र तेजी से उभर रहा है वह है क्षेत्रीय भाषाओं की सामग्री।**

अधिकतर ओटीटी कंपनियों का आर्थिक मॉडल या तो सदस्यता आधारित हैं या विज्ञापन आधारित। विज्ञापन आधारित मॉडल में कमाई सीमित होती है, जबकि सदस्यता आधारित मॉडल में दर्शक घट रहे हैं। ऐसे में उनका वित्तीय संतुलन बिगड़ रहा है। इसलिए माना जा रहा है कि अब जब ओटीटी की वृद्धि रुक रही है, तो इसका सीधा असर भारतीय फिल्म उद्योग पर पड़ेगा - और यह असर कई स्तरों पर महसूस होगा। ओटीटी के दौर में एक समय यह लगा था कि सिनेमाघर अप्रासंगिक हो जाएंगे। हालांकि ओटीटी सिनेमाघरों का स्थान नहीं ले सका फिर भी सिनेमाघर अप्रासंगिक होते चले गये हैं। असल बात यह भी है कि सिनेमा का मनोरंजन व्यवसाय जगत में स्थान बहुत सिकुड़ गया है क्योंकि अब मनोरंजन के अनेक अन्य क्षेत्र उभर आये हैं जिन्होंने सिनेमा को पीछे धकेल दिया है। पर ओटीटी की मंदी थिएटरों को फिर से मेनस्ट्रीम बना देगी इस में संशय है। बड़े निर्माता बड़े पर्दे की रिलीज़ को प्राथमिकता देते रहे हैं जिससे फिल्म की मार्केटिंग, स्टार वैल्यू और सामूहिक अनुभव की परंपरा बनी रही है। ओटीटी पर जहां यथार्थवाद के नाम पर बोल्ड और डार्क विषयों का बोलबाला रहा, वहीं क्या अब फिल्मकार क्या फिर से पारिवारिक, सामाजिक और मसाला मनोरंजन की ओर लौटेंगे, यह बड़ा सवाल है। महामारी के बाद मध्यम बजट की फिल्में - जो न तो बड़े सितारों पर निर्भर थीं, न ही पूरी तरह प्रयोगात्मक थीं - ओटीटी पर अच्छा प्रदर्शन कर रही थीं। अब जब प्लेटफॉर्म्स खरीद कम कर रहे हैं, तो इन फिल्मों के लिए बाज़ार सिमट सकता है। थिएटर में इनका मुकाबला ब्लॉकबस्टर फिल्मों से होगा, जो उनके लिए भारी पड़ेगा। यानी या तो फिल्में बहुत बड़ी होंगी, या बहुत छोटी - फिल्म समारोहों में या यूट्यूब पर चलने वाली। बीच का रास्ता नज़र नहीं आ रहा है। ओटीटी ने देशभर से नए चेहरे और नए लेखक दिए। जब ओटीटी निवेश घटाएगा, तो इन नवोदित कलाकारों के लिए अवसर भी घटेंगे। बड़े प्रोडक्शन हाउस फिर से स्थापित सितारों और सुरक्षित विषयों की ओर ही लौटेंगे। इससे प्रयोगशीलता पर असर पड़ सकता है। ओटीटी की आज़ादी ने कई संवेदनशील और राजनीतिक विषयों को उठाने का रास्ता खोला। लेकिन जब प्लेटफॉर्म आर्थिक संकट में होंगे, तो वे विवादास्पद विषयों से बचेंगे। इससे सृजनात्मक स्वतंत्रता सीमित हो सकती है।

हालांकि यह कहना गलत होगा कि ओटीटी समाप्त होने की ओर है। यह केवल स्थिर हो रहा है। आने वाले वर्षों में ओटीटी और थिएटर दोनों ही सह-अस्तित्व की राह पकड़ सकते हैं। कई फिल्में पहले थिएटर में और कुछ सप्ताह बाद ओटीटी पर आएंगी। यह मॉडल पहले से प्रचलन में है और भविष्य में इसके और परिष्कृत होने का अनुमान लगाया जा रहा है। ओटीटी की स्थिरता के बीच एक क्षेत्र तेजी से उभर रहा है वह है क्षेत्रीय भाषाओं की सामग्री। तमिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी और पंजाबी ओटीटी शो की लोकप्रियता बढ़ रही है। आने वाले समय में इन पर निवेश बढ़ सकता है। जहां पहले मात्रा में कंटेंट बन रहा था, अब प्लेटफॉर्म सीमित लेकिन बेहतर परियोजनाएं चुनेंगे। इससे लेखन, निर्देशन और तकनीक के स्तर पर सुधार आने की संभावना देखी जा रही है। थिएटर अब इवेंट सिनेमाज का रूप ले रहे हैं - यानी बड़े विजुअल्स, भव्य अनुभव और स्टार पावर। आशावादी लोग मान रहे हैं कि फिल्में अब केवल कहानी नहीं, बल्कि एक अनुभव बनेंगी। यह पुनर्जागरण भारतीय फिल्म उद्योग को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बना सकता है। ओटीटी ने भारतीय रचनाकर्मियों की कल्पनाशक्ति को बहुत व्यापक फ़लक दिया है। लोगों ने छोटे कस्बों से लेकर महानगरों तक, हर तरह की कहानियां देखीं हैं। लेकिन अब, जब इसकी चमक घट रही है, तो क्या दर्शक फिर से सामूहिक अनुभव की ओर लौटेंगे जिसमें परिवार के साथ सिनेमा देखने की परंपरा रही है? ऐसा बदलाव केवल व्यावसायिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भी होगा। समाज की भावनाओं का दर्पण माना जाने वाला भारतीय सिनेमा को ओटीटी ने खंडों में बांट दिया - 'अर्बन', 'इंटेलेक्चुअल', 'युवा' आदि में। इसीलिए ओटीटी के गुब्बारे के सिकुड़ने को किसी युग के अंत का संकेत नहीं, बल्कि एक परिपक्वता की शुरुआत भी मानी जा रही है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकर एवं विश्लेषक)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : राष्ट्र निर्माण की शताब्दी यात्रा

राजेन्द्र राठौड़

वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी ने नागपुर में विश्व के सबसे बड़े स्वंयसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की गई थी जिसका उद्देश्य देश की आत्मा को पुनः जागृत करना था। यह वही काल था जब देश गुलामी की जंजीरों में बंधा था, सामाजिक विभाजन गहरा था और आत्मविश्वास खो चुका समाज एक नई दिशा की तलाश में था। ऐसे समय में डॉ. हेडगेवार ने यह संकल्प लिया कि भारत को फिर से आत्मगौरव और एकता के सूत्र में पिरोना होगा। संघ की स्थापना का मार्ग सरल नहीं था। उस समय राजनीतिक आंदोलनों से तत्काल ख्याति प्राप्त होती थी, परंतु संगठन निर्माण और सांस्कृतिक जागरण की यह तपस्या एक लंबा और मौन संघर्ष थी। डॉ. हेडगेवार ने उसी कठिन मार्ग को चुना और आज यह सिद्ध हुआ कि उन्होंने जिस बीज को बोया, वह आज राष्ट्र चेतना के विराट वटवृक्ष के रूप में विकसित हो चुका है। संघ की 100 वर्षों की यात्रा त्याग, निःस्वार्थ सेवा और राष्ट्र निर्माण की एक अद्भुत मिसाल है।

संघ ने प्रारंभ से ही यह विश्वास रखा कि राष्ट्र निर्माण की शुरुआत व्यक्ति निर्माण से होती है। इसलिए उसने शाखाओं के माध्यम से एक ऐसा तंत्र खड़ा किया, जहां स्वयंसेवक न केवल शारीरिक और मानसिक रूप से सशक्त बनते हैं, बल्कि चरित्र, अनुशासन और सेवा की भावना से ओत-प्रोत होते हैं। संघ की शाखा केवल व्यायाम या प्रार्थना का केंद्र नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व और संस्कार निर्माण की वह प्रयोगशाला है जहां से समर्पण, सहयोग और संगठन की भावना समाज में प्रवाहित होती है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार और अनेक स्वयंसेवक सक्रिय रूप से आंदोलन से जुड़े। कई बार जेल गए, अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को संरक्षण और सहयोग दिया। आज़ादी के बाद भी जब देश विभाजन की वेदना से गुजर रहा था, तब संघ के स्वयंसेवक निस्वार्थ भाव से शरणार्थियों की सेवा में जुट गए। चाहे प्राकृतिक आपदाएं रही हों, सीमा पर संकट की घड़ी हो या सामाजिक अशांति का दौर हो, हर बार स्वयंसेवक अठिाम पंक्ति में खड़े दिखाई दिए। यह परंपरा आज भी अविचल है।

आज संघ की 83,000 से अधिक दैनिक शाखाएं देशभर में कार्यरत हैं। नागपुर में आरंभ हुए उस छोटे से संगठन की शाखा में मात्र 17 कार्यकर्ता थे और आज लाखों स्वयंसेवक राष्ट्रसेवा के विविध क्षेत्रों में कार्यरत हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण, कृषि, आदिवासी कल्याण, ग्राम विकास और सामाजिक समरसता जैसे क्षेत्रों में संघ से प्रेरित संगठन और कार्यकर्ता समाज के हर वर्ग तक पहुंच चुके हैं। यह एक जीवंत उदाहरण है कि कैसे संघ ने 'संघटन से समाज सशक्तिकरण' का सपना साकार किया है। संघ ने हाल के वर्षों में पंच परिवर्तन स्वबोध, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक शिष्टाचार और पर्यावरण संरक्षण जैसे संकल्पों के माध्यम से आधुनिक भारत की चुनौतियों का उत्तर प्रस्तुत किया है। यह पहल न केवल संगठन के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी यह संदेश देती है कि सेवा, संस्कार और समरसता ही भारत के विकास की वास्तविक शक्ति हैं।

आज जब भारत विश्व मंच पर नई पहचान गढ़ रहा है तब यह स्वीकार करना होगा कि संघ की भूमिका अब केवल सांस्कृतिक संगठन तक सीमित नहीं है। संघ आज समाज जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन का प्रेरक बन चुका है। संघ से जुड़े स्वयंसेवक शिक्षा के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा दे रहे हैं, डिजिटल साक्षरता के माध्यम से नई पीढ़ी को सशक्त बना रहे हैं और पर्यावरण संरक्षण के लिए जन-जागरण अभियान चला रहे हैं।

संघ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी भी बाहरी अनुदान या सहायता के बिना, स्वयंसेवकों के योगदान से चलता है। आज की भौतिकवादी दुनिया में यह आत्मनिर्भरता और निःस्वार्थ सेवा का सर्वोत्तम उदाहरण है। हर स्वयंसेवक अपनी दिनचर्या, परिवार और जिम्मेदारियों के बीच समय निकालकर राष्ट्र सेवा को प्राथमिकता देता है यही भावना संघ को विशिष्ट बनाती है।

संघ ने हमेशा यह मान्यता दी कि राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं से नहीं बनता, बल्कि उसकी आत्मा उसके नागरिकों की चेतना और संस्कारों में बसती है। यही कारण है कि संघ ने राजनीति से परे रहते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग में जागरूकता और समरसता का भाव जगाया। चाहे मंदिर-निर्माण आंदोलन रहा हो, स्वदेशी की भावना हो या पर्यावरण और जल संरक्षण जैसे विषय हर मुद्दे को संघ ने राष्ट्र-धर्म का हिस्सा माना। संघ के लिए राष्ट्रवाद केवल नारा नहीं, बल्कि जीवन जीने की पद्धति है जिसमें व्यक्ति नहीं, पूरा समाज केंद्र में होता है। यही दर्शन भारत को संगठित, समरस और सशक्त राष्ट्र बनाने की प्रेरणा देता है।

आज जब हम संघ की स्थापना के 100 वर्षों के इस गौरवपूर्ण पड़ाव पर खड़े हैं, तब यह स्पष्ट दिखता है कि यह यात्रा केवल इतिहास का अध्याय नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा है। 2047 तक विकसित भारत का जो स्वप्न प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्र के सामने रखा है, उसकी पूर्ति में संघ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक ऐसा समाज जो विविधता में एकता का प्रतीक बने, जहां विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय हो, जहां परंपरा और प्रगति का संतुलन हो, यही संघ के विचार का सार है।

संघ में सामान्य व्यक्ति मिलकर असामान्य और अभूतपूर्व कार्य करते हैं और यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। संघ की शाखाओं से निकले स्वयंसेवक आज समाज के हर क्षेत्र में राष्ट्र प्रथम की भावना को जी रहे हैं। आज के बदलते वैश्विक परिवेश में जब युवा वर्ग तकनीक और आधुनिकता की ओर अग्रसर है तब संघ उनके जीवन में भारतीयता और आत्मगौरव का भाव भरने का कार्य कर रहा है। शाखाओं के माध्यम से युवाओं को शारीरिक सशक्तिकरण के साथ-साथ नैतिक और सामाजिक दायित्वों का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यही कारण है कि आज का स्वयंसेवक न केवल राष्ट्रभक्त है बल्कि वह एक आदर्श नागरिक, जिम्मेदार परिवारजन और समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी है।

-राजेन्द्र राठौड़,
पूर्व नेता प्रतिपक्ष

आंवला व लिसोड़ा से किसानों की तस्वीर संवारने की पहल

डॉ. सुदीप कुमावत

राज्य सरकार प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर भावी पीढ़ियों के लिए समृद्ध वन, खुशहाल वन्य जीवन और स्वच्छ पर्यावरण उपलब्ध करवाने के लिए संकल्पित है साथ ही जलवायु परिवर्तन के प्रति बेहतर अनुकूलता अर्जित कर सतत विकास लक्ष्य व हरित बजट की अवधारण को साकार करने की दिशा में प्रयासरत है। आमजन को स्वच्छ पर्यावरण के साथ-साथ रोजगार उपलब्ध करवाने के लिए जिला प्रशासन, जयपुर द्वारा वनस्पति प्रजाति एवं उपज संरक्षण व संवर्धन अभियान प्रारम्भ किया गया है। इस अभियान के अन्तर्गत चिन्हित एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति लिसोड़ा व एक जिला-एक उपज आंवला की महत्ता, उपयोगिता एवं आवश्यकता से आमजन को रूबरू करवाने एवं रोजगार की दृष्टि से जनउपयोगी बनाने हेतु जिला प्रशासन द्वारा कार्य किया जा रहा है।

जयपुर को हरित व रोजगार उन्मुख जिला बनाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा पंच-गौरव के तहत वनस्पति प्रजाति व उपज का संग्रहण, भण्डारण, पैकेजिंग एवं प्रसंस्करण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है साथ ही नई प्रौद्योगिकी व उन्नत कृषि तकनीकों का प्रयोग करते हुए स्थानीय बाजारों को बढ़ावा देने की शुरूआत की गई है। आंवला व लिसोड़ा से प्राप्त फल को बाजार उपयोगी बनाने तथा युवाओं, किसानों व आमजन के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना जानी है तथा वनस्पति प्रजाति एवं उपज के पौधे लगाने, औषधीय गुणों के संबंध में किसानों व आमजन को जागरूक करने की पहल की गई है। राज्य सरकार द्वारा जीआई-टैगिंग, ब्रांड निर्माण, उत्पाद पैकेजिंग, खुदरा व ऑनलाइन विज्ञापन को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किए जा रहे है इससे निश्चित ही आमजन में वनस्पति प्रजाति एवं उपज के संरक्षण व संवर्धन के प्रति सकारात्मक उत्साह का संचार होगा।

वनस्पति प्रजाति एवं उपज को विकसित करने के लिए प्रयास :- एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति लिसोड़ा एवं एक जिला-एक उपज आंवला को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाकर किसानों की तस्वीर संवारने का काम किया जा रहा है लिसोड़ा व आंवला की विशिष्टता, औषधीय गुण व उपयोगिता से किसानों को अवगत करवाने एवं रोजगार उन्मुख बनाने हेतु कृषि एवं उद्यानिकी विभाग तथा वन विभाग द्वारा किसानों की संगोष्ठी, बैठक, कार्यशाला का आयोजन जिला/ब्लॉक/ग्राम पंचायत स्तर पर किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से अधिक से अधिक किसानों एवं आमजन को आंवला व लिसोड़ा के बगीचे लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है साथ ही केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं के माध्यम से किसानों को मिलने वाले लाभों की जानकारी उपलब्ध करवायी जा रही है। जिसमें अब तक विभागीय मद से रू 5.00 लाख व्यय किए गए है। जयपुर में वर्तमान में आंवले के बगीचों का क्षेत्रफल 900 हैक्टेयर है जिससे अनुमानित पैदावार 23865 मैट्रिक टन प्रति वर्ष होती है। उद्यानिकी विभाग द्वारा इस वर्ष 50 हैक्टेयर भूमि पर आंवले के नवीन बगीचे लगाए गए है।

वन विभाग की नर्सरियों में अन्य पौधों के साथ-साथ लिसोड़ा के वर्ष 2024-25 में 44 हजार पौधे व वर्ष 2025-26 में लगभग 1.20 लाख पौधे तैयार कर वितरित किए गए है। जिले की 485 पंचायत पौधशालाओं में अन्य पौधों के साथ-साथ आंवला के एक लाख पौधों व लिसोड़ा के 20 हजार पौधे विकसित कर उनका रोपण किया गया है। प्रत्येक ग्राम पंचायत/ नगरपरिषद/ नगरपालिका में आंवला व लिसोड़ा के 250-250 पौधे लगाकर उनको विकसित करने के लिए जिले के सभी उपखण्ड अधिकारियों से भूमि चिह्नित कर प्रस्ताव आमंत्रित कर लिए गए है। जिसके तहत आंवला के लिए 131.73 हैक्टेयर भूमि तथा लिसोड़ा के लिए 110.34 हैक्टेयर भूमि चिह्नित कर आंवला व लिसोड़ा के पौधे लगाए गए है। लिसोड़ा व आंवला के पौधों की महत्ता व उपयोगिता से आमजन को रूबरू करवाने के लिए प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। जिला प्रशासन इस अभियान से जन-जन को जोड़ने के लिए पूर्णत्तया प्रतिबधता से कार्य कर रहा है। आंवला व लिसोड़ा के पौधों को जिले में सघन रूप से विकसित करने के लिए जिला प्रशासन द्वारा गांव-ढाणी के लोगों की जनभागीदारी सुनिश्चित करते हुए इस अभियान को चलाया जा रहा है उम्मीद है कि जल्द ही इसके सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

बाजार व उचित मूल्य उपलब्ध करवाना : -आंवला एवं लिसोड़ा की उपज को बाजार व सही भाव नही मिलने के कारण किसान इससे धीरे-धीरे विमुख होते जा रहे थे लेकिन अब पंच-गौरव कार्यक्रम व जिला प्रशासन के पहल के बाद किसानों व आमजन में उत्साह का संचार हुआ है। जिले में खाद्य प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना के बाद किसानों को उचित लाभ व बाजार उपलब्ध होगा जिससे गांव के लोगों को रोजगार के अवसर व किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य मिल सकेगा। राज्य सरकार व जिला प्रषासन के निर्देशानुसार कृषि एवं उद्यानिकी व वन विभाग इस संबंध में जिला स्तर पर कार्ययोजना बना रहे है।

कार्यक्रम की क्रियान्विति और सहयोग के लिए ग्राम पंचायत, ब्लॉक एवं उपखण्ड स्तर पर आमजन व स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भागीदारी सुनिश्चित कर इस अभियान से ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ा जा रहा है। राजस्व विभाग, वन विभाग, कृषि और उद्यानिकी विभाग एवं ठाामीण विकास विभाग के बीच समन्वय से इस अभियान का क्रियान्वयन किया जा रहा है। पंच-गौरव से संबंधित विभागों की योजनाओं, भामाशाहों का सहयोग एवं सीएसआर फंड के माध्यम से इस अभियान पर राशि व्यय की जा रही है।

अभियान से होने वाले संभावित लाभ :-इन पौधों को ग्राम पंचायत स्तर पर विकसित करने से पर्यावरण संरक्षण, रोजगार एवं आर्थिक उन्नित का मार्ग प्रषस्त होगा। ठााम पंचायत स्तर पर मिनी जंगल विकसित होने से स्थानीय पक्षियों, कीटों और छोटे जीवों के लिए आवास उलब्ध हो सकेंगे (जैव विविधता में सुधार), कार्बन अवशोषण बढ़ेगा एवं स्थानीय तापमान में कमी आएगी, घने वृक्ष रोपण से मिट्टी का कटाव रूकेगा और रेत के टीलों को स्थिर करने से मरूस्थलीकरण रोकथाम में मदद मिलेगी। आंवला व लिसोड़ा के फलदार एवं औषधीय पौधों से ठााम पंचायत एवं ठाामीणों हेतु अतिरिक्त आय के साधन उपलब्ध होंगे। जिला स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों को अर्जित करने मे सहायता मिलेगी तथा ग्राम पंचायत स्तर पर आम-जन के लिए हरित पार्क का निर्माण होगा। इस प्रकार राज्य व जिले में हरित आवरण का तय लक्ष्य 33 प्रतिशत प्राप्त करने में मदद मिलेगी। उक्त अभियान द्वारा आंवला व लिसोड़ा को राज्य, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में मदद मिलेगी। यह अभियान जिला प्रशासन की दूरदर्शी सोच का परिणाम है, जो जिले को समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित बनाने की दिशा में अपना महत्तवपूर्ण योगदान देगा।

-डॉ. सुदीप कुमावत,
मुख्य आयोजना अधिकारी,
कलेक्ट्रेट जयपुर।

राज्य में सरकारी स्कूलों के स्टूडेंट्स को नहीं देनी होगी परीक्षा फीस

- **प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को 30 रुपए परीक्षा शुल्क देना होगा**
- **समान परीक्षा योजना के तहत राज्यभर में हाफ ईयरली एग्जाम 20 नवंबर से शुरू होंगे, इन परीक्षाओं के प्रश्न पत्र, मूल्यांकन प्रणाली और समय सारणी राज्य स्तर से एक समान रहेगी**

बीकानेर, (निसं)। राज्य में 20 नवंबर से शुरू हो रही समान परीक्षा योजना के तहत इस बार सरकारी और निजी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग व्यवस्था रहेगी। जहां सरकारी स्कूलों के स्टूडेंट्स को परीक्षा के लिए कोई फीस नहीं देनी होगी, वहीं प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को 30 रुपए परीक्षा शुल्क देना होगा।

शिक्षा विभागीय परीक्षा कार्यालय की ओर से आयोजित होने वाली समान परीक्षा के लिए राज्यभर के निजी स्कूलों से प्रति छात्र 30 रुपए फीस तय की गई है। हालांकि विभाग की ओर से यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि यह फीस स्कूल खुद जमा कराएंगे या विद्यार्थियों से वसूल की जाएगी। कई निजी स्कूल अपने स्तर पर यह फीस शिक्षा विभाग को जमा कराते हैं, जबकि कुछ स्कूल छात्रों से सीधा शुल्क वसूल कर रहे हैं। परीक्षा शुल्क की तरह स्पोर्ट्स फीस का बोझ भी केवल निजी स्कूलों पर ही है। सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों से स्पोर्ट्स फीस नहीं ली जाती, लेकिन निजी स्कूलों को यह राशि अपने स्तर पर विभाग में जमा करानी होती है। हर निजी स्कूल को खेलकूद शुल्क के रूप में हजारों रुपए अतिरिक्त जमा कराने पड़ते हैं, भले ही उनके छात्र खेलकूद गतिविधियों में हिस्सा न ले रहे हों। समान परीक्षा योजना के तहत राज्यभर में हाफ ईयरली एग्जाम 20 नवंबर से शुरू होंगे। इन परीक्षाओं के प्रश्न पत्र, मूल्यांकन प्रणाली और समय सारणी राज्य स्तर से एक समान रहेगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 28 अक्टूबर, 2025

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र सायं 5:30 तक, धृति योग प्रातः 7:51 तक, वणित करण प्रातः 9:24 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मकर, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा प्रातः 9:24 से रात्रि 9:45 तक रहेगी। आज डाला छठ महापर्व पर उदयगामी सूर्य को अर्ध्य और आज अष्टानिका महापर्व आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ अमृत सूर्योदय से 9:24 तक, शुभ 10:47 से 12:11 तक, चर 2:57 से 4:20 तक, लाभ अमृत 4:20 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:38, सूर्यास्त 5:43 तक

मेष

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

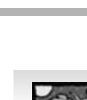

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

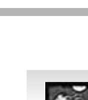

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

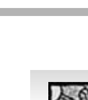

कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में रचनात्मक-धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

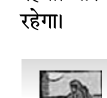

कुंभ

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असेतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

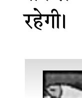

मीन

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।